क्या आपको पता है मरने के समय क्यों आवाज बंद हो जाती है ?

जीवन और मृत्यु दोनों ही संसार का परम सत्य है। जो धरती पर आया है उसका एक दिन जाना तय है। यह जानते हुए भी मनुष्य मरने से डरता है और जब मृत्यु की घड़ी नजदीक आ जाती है तब प्राणों से और मोह बढ़ जाता है। लेकिन यम के दूत मोह में फंसे हुए व्यक्ति की एक नहीं सुनते हैं और यमपाश में बांधकर व्यक्ति की आत्मा को शरीर से बाहर खींच लेते हैं।

यम पाश में बंधा प्राणी लाख जोर लगा ले लेकिन उससे मुक्त नहीं हो पाता है और अंततः उसे शरीर को और अपने सगे-संबंधियों को छोड़कर जाना पड़ता है। मृत्यु के समय की इस स्थिति का वर्णन गुरूड़ पुराण में मिलता है। इस पुराण में बताया गया है कि जब मृत्यु की घड़ी निकट आती है तो यम के दो दूत मरने वाले प्राण के सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

उन्हें देखकर प्राणी घबरा जाता है। जुबान बंद हो जाती है। प्राणी बोलना चाहता है लेकिन गले से घर-घर की आवाज आती है कुछ बोल नहीं पाता है। यमदूत यमपाश फेंककर जब शरीर से प्राण खींचने लगते हैं तब पूरे जीवन में व्यक्ति ने जो भी कर्म किए हैं वह सारी घटनाएं व्यक्ति की आंखों के सामने से एक-एक करके तेजी गुजरती हैं।
यह सारी घटनाएं कर्म बनकर आत्मा के साथ जुड़ जाती हैं। इन्ही कर्मों को देखकर यमराज प्राणी के विषय में न्याय करते हैं। पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति जीवन में जितना पाप करता है उसे मृत्यु के समय उतना ही अधिक कष्ट सहना पड़ता है। क्योंकि व्यक्ति अपने किए कर्मों से मिलने वाली सजा से डरा होता है।

जैसे गलती करने के बाद माता-पिता के समाने आने से बालक डरता है और कोने में छुपकर बैठा रहना चाहता है। इसलिए मृत्यु के समय कष्ट से मुक्ति के लिए मोह का त्याग आवश्यक बताया गया है। जो प्राणी प्राण के मोह से मुक्त हो जाता है उसे मरने के समय कम कष्ट होता है।

बाप रे बाप मरने के बाद आत्मा को इतना पैदल चलना पड़ता है !

मरने के बाद पिण्डदान से व्यक्ति का एक सूक्ष्म शरीर बनता है। इस शरीर में बसकर आत्मा को एक साल में इतनी दूरी तय करनी पड़ती है जितनी दूरी कोई भी व्यक्ति पूरे जीवन में नहीं चलता होगा। और सबसे बड़ी बात यह है कि इस दूरी को तय करने के लिए न तो आपको मोटर साईकल मिलने वाली है और न कार, यह दूरी पैदल ही तय करनी पड़ती है।

अगर आप इसे कोरी कल्पना मान रहे हैं तो इस बात को मन से निकाल दीजिए। हम आपको बता दें कि यह उन ग्रंथों में लिखा है जिसके सामने हर हिन्दू अपना सिर झुकाता है। भगवान विष्णु और उनके वाहन गरुड़ के संवाद पर आधारित पुराण गुरुड़ पुराण सहित विष्णु पुराण एवं कठोपनिषद् में भी इस बात का उल्लेख किया गया है
गरुड़ पुराण के पहले अध्याय में लिखा है कि व्यक्ति के मृत्यु के बाद पापी मनुष्य को ढाई मुहूर्त में यानी लगभग 24 घंटे में यमदूत वायुमार्ग से यमलोक ले जाते हैं। यहां यमराज व्यक्ति के कर्मों का लेखा जोखा करते हैं इसके बाद यमदूत वापस व्यक्ति की आत्मा को लेकर पृथ्वी पर आते हैं।

यहां 13 दिनों में परिजनों द्वारा दिये गए पिण्डदान से व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर तैयार होता है। इस सूक्ष्म शरीर में बसकर आत्मा तेरहवीं के दिन यमलोक की यात्रा शुरू करता है। इस बार आत्मा को वायु मार्ग से नहीं बल्कि पैदल यमलोक की यात्रा करनी पड़ती है। गरुड़ पुराण के अनुसार यमलोक की दूरी 99 हजार योजन है यानी 11 लाख 99 हजार 988 किलोमीटर। इस यात्रा में कई भयानक स्थान है जिनके बारे में हम आपको कल बताएंगे।

घर पर आसान उपायों से पितरों को कर सकते हैं प्रसन्न

शास्त्रों में बताया गया है कि गया, बद्रीनाथ के ब्रह्मकपाल, गोदावरी तट एवं प्रयाग में श्राद्घ और तर्पण करने से पितर जल्दी खुश हो जाते हैं और उन्हें मुक्ति मिल जाती है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति श्राद्घ पक्ष में इन तीर्थ स्थानों पर जाकर श्राद्घ तर्पण कर सके। इसलिए शास्त्रों में कुछ ऐसे नियम बताए गए हैं कि जिससे घर पर रह कर ही श्राद्घ पक्ष में पितरों को खुश किया जा सकता है।

जिस दिन आपके घर श्राद्ध तिथि हो, उस दिन सूर्योदय से लेकर दिन के 12 बजकर 24 मिनट की अवधि के मध्य ही श्राद्ध करें। प्रयास करें कि इसके पहले ही ब्राह्मण से तर्पण आदि करा लिए जाए। इसके लिए सुबह उठकर स्नान करना चाहिए, तत्पश्चात देव स्थान और पितृ स्थान को गाय के गोबर से लीपना चाहिए और गंगाजल से पवित्र करना चाहिए।

यदि संभव हो, तो घर के आंगन में रंगोली बनाएं। घर की महिलाएं शुद्ध होकर पितरों के लिए भोजन बनाएं। जो श्राद्ध के अधिकारी व्यक्ति हैं, जैसे श्रेष्ठ ब्राह्मण या कुल के अधिकारी जो दामाद, भतीजा आदि हो सकते हैं, उन्हें न्यौता देकर बुलाएं। इस दिन निमंत्रित ब्राह्मण के पैर धोने चाहिए। इस कार्य के समय पत्नी को दाहिनी तरफ होना चाहिए। इसके बाद ब्राह्मण से पितरों की पूजा एवं तर्पण आदि करवाएं।

पितरों के निमित्त अग्नि में गाय का दूध, दही, घी एवं खीर का अर्पण करें। ब्राह्मण भोजन से पहले पंचबलि यानी गाय, कुत्ते, कौए, देवता और चींटी के लिए भोजन सामग्री पत्ते पर निकालें। दक्षिणाभिमुख होकर कुश, तिल और जल लेकर पितृतीर्थ से संकल्प करें और एक या तीन ब्राह्मण को भोजन कराएं। इसके बाद भोजन थाली अथवा पत्ते पर ब्राह्मण हेतु भोजन परोसें।

ब्राह्मण मौन रह कर भोजन करे और कर्ता क्रोध न करें। प्रसन्नचित होकर भोजन परोसें। भोजन के उपरांत यथाशक्ति दक्षिणा और अन्य सामग्री दान करें। इसमें गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घी, वस्त्र, अनाज, गुड़, चांदी तथा नमक (जिसे महादान कहा गया है) का दान करें। इसके बाद निमंत्रित ब्राह्मण की चार बार प्रदक्षिणा कर आशीर्वाद लें। ब्राह्मण को चाहिए कि स्वस्तिवाचन तथा वैदिक पाठ करें तथा गृहस्थ एवं पितर के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त करें।

श्राद्ध में बिल्वपत्र, मालती, चंपा, नागकेशर, कनेर, कचनार एवं लाल रंग के पुष्प का उपयोग वर्जित है। इसमें श्वेत पुष्प ही उपयोग में लाएं। श्राद्ध करने के लिए दूध, गंगाजल, मधु, वस्त्र, कुश, अभिजित मुहूर्त और तिल मुख्य रूप से अनिवार्य हैं। शास्त्र में कहा गया है कि पितृ पक्ष में अपने पितरों के निमित्त जो अपनी सामर्थ्य के अनुरूप शास्त्र विधि से श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करता है, उसके सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं और घर-परिवार, व्यवसाय तथा आजीविका में उन्नति होती है। साथ ही आपके कार्य व्यापार, शिक्षा अथवा वंश वृद्धि में आ रही रुकावटें दूर हो जाएंगी।

यमराज के ये गुप्तचर हर पल आप पर नजर रखते हैं

कई बार हम मनुष्य जानते बूझते हुए ऐसी गलती करते हैं जो धर्म विरूद्ध होता है। हमें लगता है कि हम जो काम कर रहे हैं उसे कोई देख नहीं रहा है। जबकि सच यह है कि हम पर चौबीस घंटे यमराज के गुप्तचर की नजर रहती है।

हम यह बात उस पुराण के आधार पर कह रहे हैं जिसमें भगवान विष्णु ने गरूड़ को मृत्यु के बाद की स्थितियों को बतया है। इस पुराण का नाम है गरूड़ पुराण। इस पुराण में बतया गया है कि जब मृत्यु के बाद यमराज के सामने यमदूत आत्मा को लेकर पहुंचते हैं तब यमराज अपने सहयोगी चित्रगुप्त से व्यक्ति के कर्मों का लेखा जोखा बताने के लिए कहते हैं।

यमराज की आज्ञा मिलने पर चित्रगुप्त गुप्तचर को बुलाते हैं। गुरूड़ पुराण मे यमदूत के गुप्तचर का नाम श्रवण बताया गया है। इनकी पत्नी का नाम श्रवणी है। यह ब्रह्मा के पुत्र हैं। दोनों

धरती, आकाश और पाताल में विचारण करते रहते हैं। व्यक्त जो भी कर्म करते हैं उन्हें यह दूर से देख और सुन लेते हैं।

पुरूषों के कर्म को श्रवण देखते हैं और स्त्रियों के कर्मों को श्रवणी देखती हैं। यह यमराज को व्यक्ति के पाप और पुण्यों की जानकारी देते। इनके द्वारा दी गयी जानकारी की पुष्टि सूर्य, चन्द्र, अनल, वायु, दोनों संध्याएं करती हैं। इसके बाद चित्रगुप्त से विचार-विमर्श करके यमराज व्यक्ति को दंड देते हैं।

पापियों को देखते ही यमलोक की नदी को जाने क्या हो जाता है

जिस तरह यमलोक के मार्ग दु:खद और कष्टकारी हैं उसी प्रकार यमपुरी की नदी भी भयावह है। गरूड़ पुराण के अनुसार इस नदी का विस्तार सौ योजना यानी एक सौ बीस किलोमीटर है। धरती की नदियों में जिस तरह जल प्रवाहित होता है उसी प्रकार इस नदी में रक्त और मवाद बहता है। नदी के तट हड्डियों से भरे हैं।

जब यमदूत इस नदी के पास पापी मनुष्य को लेकर आते हैं तो नदी उन्हें देखकर गर्जना करने लगती है। नदी में बहता रक्त खौलने लगता है। जिससे पाप कर्म करने वाले व्यक्ति की जीवात्मा भय से कंपने लगती है। इस नदी में मगरमच्छ, सूई के समान मुखवाले भयानक कृमि, मछली और वज्र जैसी चोंचवाले गिद्ध रहते हैं।
इस नदी को पार करने के लिए एक मात्र नाव है जिसे एक प्रेत चलता है। यह प्रेत नदी के तट पर पहुंचकर पिण्ड से बने शरीर में बसे आत्मा से पूछता है कि तुम्हारे पास ऐसा कौन सा पुण्य है जिससे तुम नाव पर बैठकर नदी पर कर सकते हो। जिस व्यक्ति ने जीवन में गाय का दान किया है उस व्यक्ति को प्रेत नाव पर बैठाकर नदी पार करवा देता है।

शास्त्रों में दान को वितरण कहा गया है। दान रूपी पुण्य से इस भयानक नदी को नौका पर बैठकर पार किया जा सकता है इसलिए इस नदी का नाम वैतरणी है। जिनके पास दान रूपी पुण्य नहीं होता है उनके नाक में कांटा फंसाकर आकाश मार्ग में विचरण करने वाले यम के दूत नदी के उपर से खींचते हुए ले जाते हैं।

नदी में जीवात्मा के पिण्ड से बने शरीर को नदी में मौजूद भयानक जीवन काटते रहते हैं जिससे जीवात्मा मूर्छित हो जाता है। इस तरह बड़े ही कष्ट से पापी मनुष्य इस नदी को पार करता है। इस नदी को पार करने के लिए ही शास्त्रों में गौदान करने के लिए कहा गया है। कई व्रत भी ऐसे हैं जिनसे गौदान का फल मिलता है, इसलिए मनुष्य को ऐसे पुण्यदायी व्रत करते रहना चाहिए।

बाप रे बाप मरने के बाद इतने सारे खौफनाक नर्क में जाना पड़ता है

यमलोक में पापियों के लिए माफी की कोई गुंजाइश नहीं होती। यहां एक बार यमराज ने फैसला कर दिया तो प्रेतात्माओं को पूरा दंड भुगतना पड़ता है। यम का दंड बहुत ही कष्टकारी है। पापियों को अपने पाप के अनुसार एक नर्क के बाद दूसरे नर्क में जाकर पाप का फल भोगना पड़ता है।

गरूड़ पुराण में बताया गया है कि नर्क की कुल संख्या 84 लाख है। इनमें 21 प्रमुख नर्क हैं तामिस्र, लोहशंकु, महारौरव, शाल्मली, रौरव, कुड्मल, कालसूत्र, पूतिमृतिका, संघात, लोहितोद, सविष, संप्रतापन, महानिरय, काकोल, संजीवन, महापथ, अवीचि, अंधतामिस्र, कुंभीपाक, संप्रतापन और तपन।

जो व्यक्ति धर्म को ताक पर रखकर पूरे जीवन पाप कर्म से ही धन कमाते हैं और दूसरों को दु:ख देते हैं उन्हें युगों-युगों तक इन नर्कों में भटकना पड़ता है। इन नर्कों में लाने से पहले यमराज के दूत प्रेतात्माओं को एक वृक्ष से बांधकर लटकाते हैं औ खूब मारते हैं। पापात्मओं को यमराज के दूत ऐसे कष्ट देते हैं जिन्हें पढ़कर दिल दहल जाएगा इसलिए इनका वर्णन यहां नहीं किया जा रहा है।

अगले अंक में पढ़िए किस पाप के लिए कैसी सजा मिलती है

क्या जीते जी यमराज के दरबार के दर्शन करना चाहेंगे ?

जिस तरह पृथ्वी की अदालत में जज साहब वकीलों की दलील सुनकर न्याय करते हैं उसी प्रकार यमलोक में यमराज जज हैं। यहां चित्रगुप्त आरोपी यानी प्रेतात्माओं के कर्मों का ब्यौरा देते हैं। जिस व्यक्ति के पास पुण्य की पूंजी नहीं होती है उसको देखकर यमराज की आंखें आंगार की तरह लाल हो जाती है और महाभयानक यम का रौद्र रूप प्रकट होता है। यम के इस रूप को देखकर प्रेतात्मा दहल उठता है।

क्रोध में भरे हुए यमराज अपने दूतों को आवाज देते हैं। चंड और प्रचंड नाम के दो प्रमुख दूतों के अलावा यम के दूसरे दूत पाश में बांधकर पापी प्रेतात्माओं को यमराज की अदालत से लेकर नर्क ओर ले जाते हैं। गुरूड़ पुराण में बताया गया है कि यम के दरवार में चार दरवाजे हैं। यम द्वारा फैसला सुनाए जाने के बाद जो लोग पापी होते हैं उनकी आत्माओं को यमदूत दक्षिण दरवाजे से लेकर जाते हैं।

जिनके पास पुण्य होता है यानी जो लोग जीवन में धर्म-कर्म करते हैं वह उत्तर, पूर्व एवं पश्चिम दिशा के द्वार से जाते हैं। इस दिशाओं से जाने वालों को स्वर्ग एवं पितृ लोक में अपने कर्मों के अनुसार सुख प्राप्त होता है। दक्षिणी द्वार से जिन लोगों को ले जाया जाता है उन्हें यमदूत पेड़ से लटका कर पहले खूब पीटते हैं और तरह तरह की यातनाएं देते है। इसके बाद उन्हें अलग-अलग नर्क में ले जाया जाता है। अलग-अलग नर्क में मिलने वाले दंड के बारे में अगले अंक में जानेंगे।

हिमाचल में यमराज का एक मंदिर है। इस मंदिर में भी चार दरवाजे हैं। माना जाता है कि मरने के बाद व्यक्ति की आत्माओं को यमदूत सबसे पहले यहीं लेकर आते हैं। यहां यम का न्याय होने के बाद यमदूत व्यक्ति के कर्मों के अनुसार उन्हें अलग-अलग द्वार से लेकर बाहर जाते हैं।

मंदिर, जहां मरने के बाद सबसे पहले पहुंचती है आत्मा

एक मंदिर ऐसा है जहां मरने के बाद हर किसी को जाना ही पड़ता है चाहे वह आस्तिक हो या नास्तिक। यह मंदिर किसी और दुनिया में नहीं बल्कि भारत की जमीन पर स्थित है। देश की राजधानी दिल्ली से करीब 500 किलोमीटर की दूरी पर हिमाचल के चम्बा जिले में भरमौर नामक स्थान में स्थित इस मंदिर के बारे में कुछ बड़ी अनोखी मान्यताएं प्रचलित हैं।

यहां पर एक ऐसा मंदिर है जो घर की तरह दिखाई देता है। इस मंदिर के पास पहुंच कर भी बहुत से लोग मंदिर में प्रवेश करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। बहुत से लोग मंदिर को बाहर से प्रणाम करके चले आते हैं। इसका कारण यह है कि, इस मंदिर में धर्मराज यानी यमराज रहते हैं। संसार में यह इकलौता मंदिर है जो धर्मराज को समर्पित है।

इस मंदिर में एक खाली कमरा है जिसे चित्रगुप्त का कमरा माना जाता है। चित्रगुप्त यमराज के सचिव हैं जो जीवात्मा के कर्मो का लेखा-जोखा रखते हैं। मान्यता है कि जब किसी प्राणी की

मृत्यु होती है तब यमराज के दूत उस व्यक्ति की आत्मा को पकड़कर सबसे पहले इस मंदिर में चित्रगुप्त के सामने प्रस्तुत करते हैं। चित्रगुप्त जीवात्मा को उनके कर्मो का पूरा ब्योरा देते हैं इसके बाद चित्रगुप्त के सामने के कक्ष में आत्मा को ले जाया जाता है। इस कमरे को यमराज की कचहरी कहा जाता है।

कहा जाता है कि यहां पर यमराज कर्मों के अनुसार आत्मा को अपना फैसला सुनाते हैं। यह भी मान्यता है इस मंदिर में चार अदृश्य द्वार हैं जो स्वर्ण, रजत, तांबा और लोहे के बने हैं। यमराज का फैसला आने के बाद यमदूत आत्मा को कर्मों के अनुसार इन्हीं द्वारों से स्वर्ग या नर्क में ले जाते हैं। गरूड़ पुराण में भी यमराज के दरबार में चार दिशाओं में चार द्वार का उल्लेख किया गया है।

कहीं आप भी पाप की पूंजी तो जमा नहीं कर रहे

क्या आपने कभी किसी के ऊपर हो रहे अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठायी है। किसी कमज़ोर और लाचार को पिटता देखकर मदद के लिए आगे आएं हैं। अगर आपने ऐसा नहीं किया है तो समझ लीजिए आपने अपने खाते में पाप की पूंजी जमा कर ली है। शास्त्रों में जिस प्रकार से पाप और पुण्य को परिभाषित किया गया है उसके अनुसार जो व्यक्ति किसी को कष्ट में देखकर उसकी मदद नहीं करता है। किसी के भय से अथवा अपने स्वार्थ के कारण झूठ बोलता है और शरण में आये व्यक्ति की रक्षा नहीं करता है वह पापी है।

इस संदर्भ में एक कथा का उल्लेख पुराणों में मिलता है। एक थे राजा शिवि। इनके धार्मिक स्वभाव और दयालुता एवं परोपकार के गुण की ख्याति स्वर्ग में भी पहुंच गयी। इन्द्र और अग्नि देव ने योजना बनायी कि राशि शिवि के गुणों को परखा जाए। एक दिन अग्नि देव कबूतर बने और इन्द्र बाज। कबूतर उड़ता हुआ राजा शिवि की गोद में आकर बैठ गया और अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगा। इसी बीज बड़ा सा बाज राजा शिवि के पास पहुंचा और कबूतर को वापस करने के मांग करने लगा। बाज ने कहा कि, कबूतर मेरा आहार है अगर आप मुझे वापस नहीं करेंगे तो आपको मुझे भूखा रखने का पाप लगेगा।

बाज की बातों को सुनकर राजा शिवि ने कहा कि कबूतर मैं तुम्हें नहीं दूंगा अगर कोई अन्य उपाय है तो बताओ। बाज ने कहा कि कबूतर के मांस के बराबर मुझे मांस दे दीजिए इससे मेरा

काम हो जाएगा। राजा ने विचार किया कि एक जीव को बचाने के लिए दूसरे जीव का कष्ट देना पाप होगा। यही सोच कर राजा ने कबूतर को तराजू के एक पलडे में डाल दिया और अपने शरीर से मांस काटकर दूसरे पलड़े में रखने लगे। लेकिन काफी मांस रखने के बाद भी पलड़ा हिला तक नहीं। अंत में राजा शिव स्वयं दूसरे पलड़े पर बैठ गये और बाज से कहा कि तुम मुझे खाकर अपनी भूख शांत कर लो।

राजा के इस दयालुता और शरण में आये हुए कि मदद करने की भावना को देखकर कबूतर अग्नि देव और बाज देवराज इन्द्र के रूप में प्रकट हुए। आसमान से फूलों की वर्षा होने लगी। देवराज इन्द्र ने कहा कि तुम ने धर्म की लाज रखी है। जो शरण में आये की रक्षा नहीं करता वह पापी है। कमज़ोर की सहायता न करने वाला भी अधर्मी है। दोनों देवताओं ने राजा शिवि को आशीर्वाद दिया और स्वर्ग चले गये।

दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने के तीन टिप्स

वैसे तो कर्मों के फल को कोई नहीं रोक सकता, वह हर हाल में भोगना ही पड़ता है। लेकिन उपाय ऐसे अवश्य हैं, जिनके बल पर अनहोनी या असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

उसे बदलने की तकनीक पर काम करते हुए चेन्नई के वैदिक इस्टीट्यूट ऑफ स्पिरिचुअलिज्म ने कुछ ऐसे उपाय सुझाए हैं, जिनके जरिए अपने भाग्य भविष्य को काफी हद तक बदला जा सकता है। उन उपायों के बारे में बताते हुए इंस्टीट्यूट के प्रो. सोमदेव शर्मा ने कुछ टिप्स लिखे हैं। उन बिंदुओं में तीन उपाय इस प्रकार हैं।

पहली टिप: अभी तक आपका जो भी रुटीन रहा हो उसे भूल जाइए लेकिन कल से ही सूर्योदय से पहले हर हाल में बिस्तर छोड़ कर उठ जाएं। नित्य कर्मों से निपट कर साफ और धुले हुए वस्त्र पहनकर पूर्व दिशा की और मुंह करके बैठें। सुबह उगते हुए सूरज के सिंदूरी रंग को देखें। 15 से 20 मिनट तक सुबह की अरुणिम आभा का ध्यान करें और सुख-समृद्धि के साथ मन में प्रसन्नता का एहसास करें।

दूसरी टिपः इसमें कुंडलिनी शक्ति के जागरण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा गया है। अध्यात्मविदों के अनुसार कुंडलिनी शक्ति शरीर में मेरूदंड में स्थित है। इसे जगाकर साधक का दुर्भाग्य मिटाया जा सकता है।

शुरुआती तौर पर इसका अभ्यास कमर सीधी करके बैठने के रूप में किया जाता है। जिन्हें अपने भाग्य और भविष्य को बदलना है उन्हें तुरंत इसकी शुरुआत अवश्य कर देनी चाहिये। जब भी जहां भी बैठें अपनी रीढ़ को यानी मेरुदंड को हर हाल में सीधा रखे। कमर झुकाकर बैठने से कुंडलिनी शक्ति कुंद होने लगती है, जिससे इंसान दुर्भाग्य से जल्दी प्रभावित हो जता है।

कामयाबी की तीसरी टिपः इष्टमंत्र की शक्ति के महत्व से सभी परिचित हैं। यह कामयाबी का तीसरा गुर हैं। इष्टमंत्र अर्थात इष्टदेवता की आराधना के लिए जपा जाने वाला मंत्र।

अध्यात्मविदों की मान्यता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन सूर्योदय के समय निश्चित समय, निश्वित स्थान पर विशुद्ध आसन पर बैठकर बीस मिनट भी जप करता है उसके सारे बुरे प्रारब्ध यानी कर्मफलों का नाश हाने लगता है। पहले दिन से ही उसका सौभाग्य उदय होने लगता है।

कैरियर और धन संबंधी दिक्कतें दूर करती है ऊंट की मूर्ति

अगर आपको कैरियर में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। लगातार प्रयास करने के बाद भी सफलता आपसे कोसों दूर है तो सफलता तक पहुंचने के लिए आप ऊंट का सहारा ले सकते हैं। चीनी वास्तु विज्ञान फेंगशुई के अनुसार ऊंट नौकरी, व्यावसायिक एवं आर्थिक बाधाओं को दूर करने में सहायक होता है।

फेंगशुई के अनुसार ऊंट की मूर्ति को ऑफिस और घर दोनों ही जगहों पर रखा जा सकता है। इससे प्रगति की राह में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। जिनकी नौकरी अथवा व्यवसाय में सबकुछ सामान्य चल रहा है उन्हें परेशानियों एवं विरोधियों के प्रभाव से बचने के लिए अपने ऑफिस में ऊंट रखना चाहिए।

घर में ऊंट की मूर्ति रखने से आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है। धन संबंधी समस्याओं में कमी आती है। लेकिन अगर ऊंट को जोड़े में रखा जाए तो धन का आगमन भी तेज होता है और आर्थिक स्थिति उन्नत होती है। फेंगशुई के अनुसार ऊंट का सकारात्मक प्रभाव तभी प्राप्त होता है जब इसे उत्तर पश्चिम दिशा में रखा जाए।

फेंगशुई में ऊंट को लेकर ऐसी मान्यता इसलिए है क्योंकि ऊंट दृढता और संघर्ष का प्रतीक है।

मरूभूमि में मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के अलाव यह छाया और दूसरी अन्य चीजों से मनुष्य की सहायता करता है। मरूभूमि की कठिन राहों में यह एक कुशल मार्गदर्शक का भी काम करता है। इसलिए फेंगशुई में माना जाता है कि ऊंट की मूर्ति और तस्वीर जीवन की कठिनाईयों को भी पार लगाने में सहायक होता है।

कुंवारी कन्या से संबंध बनाने वालों के लिए यमलोक में कैसी सजा ?

संसार में आने पर मनुष्य को सबसे अधिक पाप की और ले जाना वाला साधन काम है। काम पीड़ित मनुष्य में अच्छे बुरे का निर्णय कर पाना कठिन हो जाता है और महापाप कर बैठता है।

ऐसा मनुष्य दुनिया समाज में निंदित होता है और मृत्यु के बाद यमलोक में जाकर ऐसी यातना प्राप्त करता है जिसे सोच कर भी प्राणी की आत्मा कांप जाती है।

गरूड़ पुराण में बताया गया है कि जो स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरूषों से संबंध रखती है उसे यमलोक में दहकते लोहे का आलिंगन कराया जाता है। पाप की सजा पूरी होने पर ऐसी स्त्री चमगादड़, छिपकली अथवा दोमुंहा सांप के रूप में जन्म लेती है।

जो पुरूष अपने गोत्र की स्त्री से संबंध बनाता है उसे लकड़बघ्घा अथवा शाही के रूप में जन्म लेना पड़ता है। कुंवारी अथवा अल्पायु कन्या से संबंध बनाने वाले को नर्क की घोर यातना सहने के बाद अजगर योनी में आकर जन्म लेना पड़ता है।

जो व्यक्ति काम भावना से पीड़ित होकर गुरू की पत्नी का मान भंग करने वाला व्यक्ति वर्षों तक नर्क की यातना सहने के बाद गिरगिट की योनी में जन्म लेता है। मित्र के साथ विश्वासघात करके उसके पत्नी से संबंध बनाने वाले को यमराज गधा की योनी में जन्म देते हैं।

लड़कियों के साथ करेंगे गलत काम तो यमलोक में मिलेगी ऐसी सजा

अबतक आप यमराज के दरबार और विभिन्न प्रकार के नर्क के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आज के अंक में पढ़िए किस कर्म के लिए किस नर्क में जाना पड़ता है और कौन सी सजा मिलती है। अगर इन बातों को याद रखेंगे तो नर्क की यातनाओं से बचेंगे और स्वर्ग का सुख भोगकर वापस

पृथ्वी पर आकर वैभव पूर्ण जीवन का आनंद लेंगे।

गरूड़ द्वारा यह पूछे जाने पर कि हे भगवन मनुष्य को किस कर्म के कारण भयानक नर्क में जाकर कष्ट भोगना पड़ता है। भगवान विष्णु कहते हैं कि जो व्यक्ति जीवन काल में प्राणियों के प्रति दया भाव नहीं रखता, कपट से धन संचित करता है और मित्रों से विश्वासघात करता है उसे नर्क में जाना पड़ता है।

मनुष्य को कभी किसी के विवाह में बाधक नहीं बनना चाहिए। जो व्यक्ति तीर्थयात्रा में बाधा डालता है और तीर्थयात्रियों को लूटता है उसे नर्क से कभी मुक्ति नहीं मिलती है। ऐसे पापी व्यक्ति की आत्मा को एक के बाद एक नर्क में जाकर दु:ख भोगना पड़ता है।

जो व्यक्ति जीवन काल में द्वेष भावना से अथवा किसी अन्य कारण से किसी के घर में आग लगा देते हैं, गांव में अथवा वन में अग्नि लगा देते हैं उन्हें यमदूत अग्निकुंड में डालकर पकाते हैं। जब प्रेत छाया और दया की भीख मांगता है तब यमदूत उसे असिपत्र वन में ले जाकर छोड़ देते हैं।

असिपत्र वन में तलवार के समान पत्तों वाले पेड़ हैं जिसके गिरने से प्रेत के अंग कटने लगते हैं। प्रेत पीने के जल मांगता है तो उसे यमदूत खौलता हुआ पानी देते हैं। इस प्रकार कष्ट प्राप्त करते हुए ऐसे व्यक्ति के प्रेत को प्रलय काल तक नर्क में रहना पड़ता है फिर वृक्ष, पशु, पक्षी, मछली, कृमि जैसे नीच योनियों में जन्म लेकर कष्ट भोगना पड़ता है।

जो स्त्री पुरूष अधिक भोग-विषय वासना में डूबे रहते हैं। खास तौर पर जब मासिकधर्म के समय जो स्त्री पुरूष संसर्ग करते हैं तामिस्र, अंधतामिस्र और रौरव नर्क में जाना पड़ता है। स्त्रियों को विश्वास में लेकर उनके धन अर्थात मान का हरण करता है उसे भयंकर नर्क में जाकर घोर यतनाओं को सहना पड़ता है।

गुरू के धन को चुराने वाला, उधार लेकर नहीं चुकाने वाला, दूसरों के अवगुणों का मजाक उड़ाने वाला और गुणों की प्रशंसा नहीं करने वाले को भी घोर नर्क में जाना पड़ता है। पतिव्रता स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्री के साथ रमण करने वाले को वैतरणी नदी में सदा निवास करना पड़ता है।

नर्क में किस कर्म की सजा भुगतकर आए हैं ऐसे जान सकते हैं

जिस प्रकार सजा पूरी होने के बाद माता-पिता बच्चों को माफ करके गलती सुधारने का अवसर देते हैं उसी प्रकार भगवान भी पाप कर्मों की सजा पूरी होने पर वापस आत्माओं को शरीर में प्रवेश करके सद्कर्मों द्वारा मुक्ति पाने का मौका प्रदान करते हैं। लेकिन जिन पाप कर्मों की सजा भुगतकर व्यक्ति वापस शरीर प्राप्त करता है उसके चिन्ह उसके शरीर पर मौजूद होता है।

भगवान विष्णु ने गरूड़ से कहा है कि जो व्यक्ति ब्रह्महत्या के कारण नर्क की सजा भुगतकर आते हैं उन्हें जीवन में क्षय रोग के कारण कष्ट भोगना पड़ता है। गाय को सताने वाला मूर्ख और कुबड़ होता है। कन्या की हत्या करने वाले व्यक्ति कोढ़ी होते हैं और इन्हें चाण्डाल योनियों में जाना पड़ता है।

झूठी गवाही के कारण नर्क की सजा भुगत कर आने वाला व्यक्ति गूंगा होता है। मांस खाने वाला व्यक्ति रोगी और बेचने वाले व्यक्ति का भाग्य साथ नहीं देता। इन्हें जीवन में बार-बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। सोने की चोरी के कारण नर्क की यातना भुगतकर आने वालों के नाखून अच्छे नहीं होते। अन्न की चोरी करने वाला चूहा बनता है।

दूसरों को दिए बिना स्वयं मिठाई खाना वाले व्यक्ति को कंठमाला नामक रोग होता है। जो व्यक्ति अभिमान के कारण गुरू का अपमान करता है उसे मिरगी की बीमारी होती है। पुस्तक चोरी के कारण नर्क से लौटा व्यक्ति जन्म से ही अंधा होता है। विष की चोरी करने वाला बिच्छू और सुंगधित पदार्थों को चुराने वाला छुछुंदर के रूप में जन्म लेकर पाप की सजा भुगतता है।

झूठ बोलकर दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाला व्यक्ति इस जीवन में हकला और ब्राह्मण एवं गाय को लात मारने वाला लंगरा होकर पैदा होता है। शाक-सब्जियों को चुराने वाले को मोर योनी जन्म लेता पड़ता है। गरूड़ पुराण में भगवान विष्णु कहते हैं कि जो व्यक्ति हिंसक कर्म करता है, जीवों की हत्या करता है, राहगीरों को धन लूटकर जीविका चलाते हैं ऐसा व्यक्ति नर्क में घोर यातना सहकर कसाई के घर बकड़ी के रूप में जन्म लेता है और कष्ट पूर्ण मृत्यु को प्राप्त करता है।

बिना निमंत्रण के जो व्यक्ति भोज में पहुंच कर खाना खाते हैं उनका जन्म कौआ के रूप में होता है। जो योग्य व्यक्तियों को विद्यादान नहीं देते ऐसे व्यक्ति बैल बनकर भारी कष्ट पाते हैं।

सासु को गाली देने वाली, नित्य कलह करने वाली स्त्री जोंक के रूप में जन्म पाती है। पति से कटु वचन कहने वाली स्त्री जूं योनी में जन्म लेती है।

मौत की आहट सुन सकते हैं छह महीने पहले, करें यह उपाय

यह तय है कि जिसे जीवन मिला है यानी शरीर प्राप्त हुआ है उसे अपने शरीर को छोड़कर एक न एक दिन जाना है। लेकिन मौत कब आएगी अगर इस चीज को पहले जान लें तो मौत का भय नहीं रहेगा। आप किसी तीर्थस्थल की यात्रा के लिए जिस प्रकार तैयार रहते हैं ठीक उसी तरह मौत के साथ विदा होने के लिए तैयार हो जाएंगे और मौत डरावनी चीज नहीं लगेगी।

गरूड़ पुराण में बताया गया है कि सामान्य स्थिति में जिनकी मृत्यु होती है वह छः महीने पहले मौत की आहट सुन सकते हैं। इसके लिए करना बस इतना होता है कि दोनों कानों को बंद करके आवज सुनने की कोशिश करें। अगर कोई शब्द या सनसनाहट नहीं सुन पा रहे हैं तो समझ लीजिए जाने का समय निकट आ रहा है।

जब मृत्यु का समय नजदीक आ जाता है तब ऐसा महसूस होने लगता है कि पूर्वक उनके आस-पास बैठे हुए हैं। कोई अनजान चेहरा आस-पास मौजूद होने का भी एहसास होता है। मृत्यु से दो दिन पहले सांस में उतार-चढ़ाव की गति बदल जाती है। आत्मा शरीर से छोड़ने के लिए तैयारी करने लगती है जिससे शरीर से एक अजब सी गंध आने लगती है जिसे मृत्यु गंध कहते हैं।

जब ऐसे स्थिति आ जाए तो अपनी मुक्ति का उपाय हर प्रकार से करना चाहिए। धीरे-धीरे संसार और परिवार से मोह-माया को हटाकर ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिए और जीवन में आपने जो भी धन-संपत्ति अर्जित की है उसे मुक्त हाथों से जितना संभव हो जरूरतमंदों को दान देना चाहिए। जिनकी मृत्यु आने वाली है उनकी संतान को भी अपने पिता एवं माता की मुक्ति के लिए यथा संभव दान और पूजन करना चाहिए।

तुलसी के पौधे की नियमित सेवा-पूजन करें। तुलसी का पत्ता अपने सिरहाने रखकर सोना चाहिए। प्रतिदिन गंगाजल पीना चाहिए। इससे आत्मशुद्धि होती है और यम के दूत ऐसे व्यक्ति को अपने साथ नहीं ले जाते हैं। ऐसा मुक्ति यममार्ग में जाने से बच जाता है और उत्तम लोकों में जाकर सुख प्राप्त करता है।